अमृत

२६.१.७५ (रविवार)

अमृत की चर्चा अनादि काल से चली आ रही है। पता नहीं यह अमृत शब्द आया कहाँ से और इसका व्यवहार क्यों किया गया?

देवता बार-बार पराजित हो रहे थे राक्षसों से, उस अवस्था में भगवान की प्रेरणा से समुद्र मंथन हुआ और अमृत का घड़ा धन्वन्तरी अपने हाथों में ले कर आये। उसके बाद वह अमृत पान किया देवताओं ने और फिर वे युद्ध में विजयी हुए – यह तो पौराणिक कथा है। कहने का मतलब कि अमृत पान करने से मरता नहीं मनुष्य आत्मा की दृष्टि से।

लोग यह समझते हैं कि अमृत पान करने से मनुष्य का शरीर भी वैसा ही रहेगा – यह भ्रमात्मक बात है यथार्थ में आत्मा की अमरता को पहचानना ही अमृत पान करना है। मनुष्य आत्मा की भावना को समझ नहीं पाता और वह यह नहीं जान पाता कि आत्मा अमर है। जिस दिन उसमें आत्मा की अमरता का भाव आ जाता है उसी दिन उसने अमृत पान किया है। यों देखा जाता है कि एक सम्प्रदाय में – जब उस मत में परिवर्तित किया जाता है व्यक्ति तो वह कहा करते हैं – "हमने अमृत चखा है" गुरु की भावना में आकर भाव पूर्ण हो गया, शीश झुक गया, शिष्य हो गया – और अब वह अमृत पान करने का अधिकारी हो गया।

अमर कौन है? यदि केवल हम यही कहें कि अमर आत्मा है तो फिर हमने बहुत संकीर्ण अवस्था में अमर शब्द का प्रयोग किया है। अमर वह

है – जो किसी अमर का चरण पकड़ता है। सत्य अमर, संत अमर, सती अमर, यह तीनों ही अमर है। सत्य – जिसकी कृपा के बल पर अवतारी संसार में आकर संसार का भार उतारते हैं। संत – जो अपनी वाणी के द्वारा सोये हुये व्यक्ति के भीतर की भावना को जगा कर अपनी वाणी के द्वारा उन्हें अमृत का पान कराते हैं। सती – जो सत्य के बल पर अपने शरीर की जरा भी चिन्ता न करते हुए अग्नि में प्रविष्ट होती है। यह अग्नि में प्रवेश होना सती का स्थूल रूप है और यथार्थ रूप यह है कि ज्ञान रूपी अग्नि में जब प्राणी प्रवेश करता है तब उसके हृदय में जितने मल हैं सबके सब मल – कमल के रूप में हो जाते हैं। हृदय खिल जाता है। चिन्ता नहीं, दुःख नहीं – केवल आनन्द।

अमृत का पहला लक्षण आनन्द। अमृत पान करके भी देवता आनन्द नहीं पा सके। केवल भोग में ही उनकी वृत्ति सदा लगी रही इसीलिए बार-बार उन देवताओं पर आक्रमण होता रहा। वे हमारी वृत्तियाँ जो दिन रात भोग और वासना के पीछे छटपटाती रहती हैं, वे भला क्यों अमृत पान करने लगी ? अमृत पान करने के पहले मनुष्य का अहंकार नहीं रहता एवं भीतर में कोमल भाव, एक आनन्द का भाव, पूर्ण रूप से पूर्व जन्म के संस्कारों को भूलकर नया जीवन और वह जीवन ऐसा कि अमरत्व को प्रदान करने वाला।

व्यक्ति गिरता है तो क्या आप समझते हैं कि "गिरा हुआ कभी उठेगा ही नहीं " उठेगा, यदि अपने में बल होता तो शायद वह गिरता ही नहीं। वह निर्बल हो गया इसीलिए गिर पड़ा। उसे उठाने वाला उसका हाथ पकड़ कर उसको भूमि पर खड़ा करने वाला, ऊँची भूमि पर खड़ा करने वाला, दुनिया के निरर्थक भावों में फँसे हुए को आनन्द का भाव देकर अमरत्व प्राप्त

कराने वाला कौन? सोचो आप कि इस प्रकार दल-दल में फँसे हुए व्यक्ति को ऊपर उठाने वाला कौन? जिसके दिल में दया है। जो छटपटाते हुए प्राणी को देखकर कहता है – यह प्राणी मेरे सम्मुख छटपटा रहा है – "मेरा दिल छटपटा रहा है, मैं कैसे इसको उठाऊँ, कैसे इसको आदमी बनाऊँ, कैसे इसको अमरत्व का भाव दूँ"। पड़ा था कबीर-मणिकर्णिका घाट की सीढ़ीयों पर केवल गुरु के भाव को लेने के लिये। उसने सुन रखा था कि "बिना गुरु के ज्ञान नहीं और बिना गुरु के भक्ति नहीं"। यों तो पूर्व ही उसके भीतर ऐसी भावना आ गई थी कि उसे किसी को गुरु बनाने की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु यदि गुरु नहीं तो वह नुगरा है वह किसी भी बात को समझने वाला नहीं। गुरु क्या करता है? जैसे हाथी पर बैठा हुआ, हाथी को चलाने वाला जब देखता है हाथी को इधर-उधर तो उसको अंकुश लगा देता है। गुरु तो वाणी का अंकुश लगाकर कहते हैं – इधर नहीं, उधर। और जहाँ मनुष्य चलता है, गुरु करता है, भीतर की भावना जागृत होती है, समय पाकर "आत्मा अमर है, देह नश्वर है" यही केवल जान ही नहीं पाता बल्कि उसके भीतर में एक दृढ़ता आ जाती है।

भगवान ने गीता में कह दिया "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः" यह बात तो कह दी, अनुभव करायेगा कौन? कोई एक पंक्ति लिख कर चला गया उसका अर्थ समझायेगा कौन? उसकी व्याख्या करेगा कौन? वहाँ फिर एक पथ-प्रदर्शक को ही "गुरु" कहा जाता है। गुरु माने जो गौरव धारण करके बैठा हो, छोटे दिल का नहीं। शिष्य को पैसे के हिसाब से नहीं तौलता, दिल के हिसाब से तौलता है। गुरु का गौरव है दुःखी, कष्ट में पड़े हुए को ऊपर उठाये, बहुत ऊपर उठाये। किसी ने कह दिया भगवान – ये पापी-तापी आपको इतने प्रिय क्यों? और ये पुण्यात्मा जो है उनकी तरफ

आप विशेष ध्यान नहीं देते हैं। कहने लगे यह तो चल रहा है (पुण्यात्मा है)। एक बच्चा जो अपने आप अपने पैरों के बल पर चलने लगता है, माँ को फिर उसे चलाने की जरूरत नहीं। लेकिन वह बच्चा जो घुटनों के बल भी नहीं चलता केवल शरीर धारण किया है और शरीर धारण करने के पश्चात् भी उसमें गति नहीं – मन की, तन की, न किसी प्रकार की। ऐसे व्यक्ति के भीतर भावना देकर मानसिक शक्ति देकर, अमरत्व का भाव देकर, 'आत्मा अमर है', यह सदुपदेश देना ही नहीं उसके भीतर में सम्पूर्ण रूप से बैठा कर ही रहता है, वही तो सद्गुरु है।

कल आपने बातें सुनी माता बनासा की। उनकी एक वाणी है जिनमें उन्होंने कहा है – "मैं तो एक तिलचट्टे की तरह उलटी पड़ी हुई थी, सद्गुरु ने ही मुझे सीधा करके चलना सिखाया"। आप समझें एक तिलचट्टा है, उलटा पड़ा हुआ है और छटपटा रहा है और दूसरा व्यक्ति उसे छटपटाते देखकर सीधा कर दे। और जब उसको सीधा कर दिया अब तो वह चलता भी है, उड़ता भी है, सब कुछ कर लेता है। तो उन्होंने एक वाणी में कहा कि "मैं तो तिलचट्टे की तरह उलटी पड़ी हुई थी, सीधा किया किसने? सीधा किया सद्गुरु ने"। यदि मैं कहूँ कि मैंने बाबाजी को महान बना दिया तो मैं ठीक आपसे कहता हूँ कि मुझसे बढ़कर और कोई कृतघ्नी नहीं। महान को महान बनाने वाला कौन? वह तो महान है। हिमालय को सबसे ऊँचा पर्वत बनाने वाला कौन? वह तो हिमालय अपने आप है। तो यदि हम यह कहें कि माँ बनासा ने बाबा को महान बना दिया तो यह हमारी कमजोरी है विचारों की। किसी ने पूछा – बाबा आप इतने बड़े कैसे हो गये? बाबा हँस के बोले – "पहाड़ को किसने बड़ा बनाया? जिसने पहाड़ को बनाया, उसी ने मुझको भी बड़ा बनाया। मैं तो बड़ा बना नहीं किसी ने बना दिया"। आप इस

चीज को समझो, जहाँ मनुष्य यह कहता है कि मैं साधना के बल पर, मैं त्याग के बल पर और अनेक प्रकार की भावना के बल पर बड़ा हो जाऊँगा तो वहाँ आप को साठ हजार वर्ष तप करने वाले उस विश्वामित्र की बात याद रखनी चाहिये कि अभिमानी होने के कारण साठ हजार वर्ष का तप एक अप्सरा को देखकर खत्म हुआ। हुआ क्या था – गुरु नहीं था पास में। गुरु समीप नहीं था और उसके भीतर काम की भावना थी और उस काम की भावना थी और उस काम की भावना के कारण ही साठ हजार वर्ष का किया हुआ तप ऐसे गिर पड़ा जैसे कि तेज आँधी में आम का पेड़ गिर पड़ता है।

एक व्यक्ति रामकृष्ण परमहंस के पास गया और बहुत हाथ-पैर जोड़ कर कहने लगा – भगवान, मुझे भी दीक्षा दीजिये, मुझे भी भाव दीजिये। रामकृष्ण परमहंस ने चेहरा देखते ही कहा – अभी तो तेरी वासना तृप्त नहीं हुई – भाई, जाओ तुम शादी करो। शादी करके आओ, इसके बाद यदि प्रभु की कृपा हुई और तुम्हारी वासना कुछ शान्त हुई तो तुम दीक्षा लेने के अधिकारी बनोगे। एक बात मैं आपसे और सुनाऊँ – एक बार अरविन्द आश्रम में (जब श्री अरविन्द जीवित थे) एक बंगाली जो उनका अति प्रिय मित्र था – एक लड़की को लेकर गया और कहा – यह लड़की साधना करना चाहती है, इसे आप आश्रम में स्थान दीजिये। उन्होंने कहा – साधना के लायक यह लड़की नहीं है। तुम मुझसे तीन हजार रुपये ले जाओ और इस लड़की की शादी कहीं कर देना। मैं इस लड़की को आश्रम में रख कर आश्रम को भ्रष्ट नहीं करवाना चाहता। एक गलती की थी महात्मा गाँधी ने और इसी गलती के कारण उन्हें साबरमती आश्रम बन्द कर देना पड़ा। वह गलती यह थी कि वे समझते थे कि मैं पुरुषों को अपने समीप सुलाऊँ और लड़कियों के बाल काट दिये जायें और वह कस्तूरबा के पास में सोयें – तो

इसमें यह होगा कि इनके भीतर काम की भावना नहीं आयेगी। लेकिन आप यह समझो कि बाल को मुंडन करवाने से दिल का मुंडन तो नहीं होता, मन तो उससे नहीं कटेगा – परिणाम यह हुआ कि उनके लड़के देवदास, राजाजी की लड़की लक्ष्मी के साथ में शादी देनी पड़ी और गाँधी जी नतमस्तक हो गये और उसी समय उन्होंने साबरमती आश्रम उठा दिया। अर्थ क्या है इसका? किसी को सुधारना हो तो पहले उसके मन को सुधारने की जरूरत है। और किया यह जाता है कि घोड़े को मला जाता है लेकिन खाना नहीं दिया जाता। शरीर के ऊपर भस्म लगाई जाती है, काँटे पर सुलाया जाता है – यह ऊपर का घोड़ा जो है इसे रगड़ा जा रहा है किन्तु उसको ज्ञान रूपी अमृत का पान नहीं करवाया गया, वह किसी भी समय कामातुर हो सकता है।

इसीलिए अमृत को यदि आप समझना चाहती हैं तो पहले मन को झुकाओ ठीक उसी तरह से जैसे तुलसीदास ने कहा – "श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार" उन्होंने मन को मुकुर कहा इसीलिये कि उर्दू के शायरों ने इस मन को दिल कह करके कहा – "इस दिल के टुकड़े हजार हुए" – यानि दिल, दिल न रहा शीशे की तरह टूट गया। तो "श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार" गुरु के चरणों की रज से मन रूपी आइने को सुधारो, नहीं तो यह टूट जायेगा – दुःख से, चिन्ता से, घृणा से, ईर्ष्या से। आप देखो – पारिवारिक जीवन का रूप – अधिकांश लोगों का दिल टूटा हुआ है – चोट पर चोट आप खाती जाती हैं – कभी पति से, कभी परिवार के लोगों से, कभी इधर-उधर के लोगों से हमेशा ही आपके दिल के ऊपर चोट लगती है लेकिन उस चोट को सम्भालने वाला कौन? आपके हृदय के ऊपर, आपके मन के ऊपर मलहम लगाने वाला वैद्य कौन है? वह

सद्गुरु हैं, सत्संग है। वह हमेशा आपको समझा कर कहेगा – यह दुनिया तो हमेशा ही अनुचित बात कहती हुई चली आई है। रामकृष्ण परमहंस जब कभी समाधिस्थ हो जाते तो लोग कहा करते थे – इनको तो मिरगी का रोग है यह कोई समाधि नहीं। और इसी तरह से भगवान कृष्ण को भी अभी तक दुनिया नहीं समझ पाई कि भगवान कृष्ण योगी थे कि भोगी? और वह राम जो सम्पूर्ण जगत में रमण कर रहा है सीता जैसी पवित्र भावना वाली, राम की सहधर्मिणी का परित्याग करता है, यह दुनिया है। इसी दुनिया में आपको रहना है जहाँ आपका अपमान होगा, आपको नीचा दिखलाने की पूरी चेष्टा की जायेगी, जितने आप ऊपर चढ़ती चली जाओगी आप पर पत्थर फेंके जायेंगे किन्तु यदि आपने अमरत्व का पाठ पढ़ लिया है, यदि अमृत का पान किया है तो क्या होगा? पहाड़ पर यदि पत्थर फेंका जाय तो पत्थर ही नीचे गिर जायेगा, पहाड़ पर कोई चोट नहीं पहुँचेगी। आपके दिल पर कोई चोट नहीं पहुँच सकती, यह पहुँच सकती है कब तक – जब तक आप दिल को बहुत छोटा, ओछा या दूसरे शब्दों में जब तक आपने भाव का अमृत पान नहीं किया।

आपके भीतर बहुत बड़ी शक्ति है लेकिन आप उसका प्रयोग नहीं जानती और जब तक आप उसका प्रयोग नहीं जानती तब तक आपको दुनिया का मुख देखना पड़ता है। तू इन्सान है – खुदा की शान है फिर भी परेशान है? यदि इन्सान न होता तो खुदा के बनाये हुए रास्तों पे कौन चलता? इसीलिये भगवान की जितनी विशेषताएँ हैं वे इन्सान के द्वारा ही लोगों के सम्मुख आती है। उस इन्सान को लोग कहते हैं – संत-साधक-ओलियापीर जो प्रभु के रास्ते पर चलता है। जो दुनिया की पीर को देखकर अपने पीर (पीड़ा) धारण करता है। जिसकी आत्मा इतनी

विशाल है कि जो सम्मुख आये – आये रोता हुआ जाये हँसता हुआ। इस प्रकार की भावना रखने वाला व्यक्ति ही इस जगत में अमरत्व का पाठ पढ़ सकता है।

लोगों ने यह समझ रखा है कि कोई अमर नहीं होता, होने वाले हो गये जी, अब कौन अमर होता है? अगर आप यह कहते हैं तो जाओ अमृतसर। जाकर देखो तो सही अमर होता है कि नहीं, होता है। वह नानक जिसको कहते हैं कि नानक - बहुत छोटा, सबसे छोटा – वह नानक आज महान रूप में है। देखो दरबार साहब – आँखें खुल जायेंगी आपकी और गुरु क्या है वह वहाँ की एक-एक ईंट बतलाती है कि गुरु क्या है? लोग सफाई कर रहे हैं – भक्त लोग आयेंगे। साफ करने वाले लोग भी भक्त हैं। वे भी नौकर नहीं। कोई झाड़ू दे रहा है। किसलिये? महाराज का दर्शन करने आ रहे हैं। लोग जूतियाँ साफ करते हैं – गुरु के बन्दों की, गुरु के प्यारों की। गुरु की महिमा यदि देखनी हो तो आप अमृतसर जाओ आप को पता लगेगा कि गुरु क्या है? जो शिष्य होता है वह कहता है – मैंने अमृत चखा है। अमृतसर नाम ही ऐसा है। सर-तलाब को कहते हैं। दरबार साहब के चारों तरफ जल ही जल है, खूब शान्ति-पूर्ण स्थान है। गंगा पवित्र है, इसमें कोई शक नहीं लेकिन लोगों ने गंगा को गन्दा करने में कोई कमी नहीं रखी, लेकिन अमृतसर में आप जाओ और देखो - कौन गन्दा करता है तलाब। स्नान कर सकते हैं आप, यह है जीती जागती गुरु की महिमा, जिसे आप देख सकते हैं अमृतसर में।

बात यह है किसी के भीतर किसी प्रकार की उत्सुकता पैदा करना – यह भी एक काम है क्योंकि जब तक आपके भीतर उत्सुकता पैदा

नहीं होगी, तब तक आप तथ्य को कैसे जान पाओगी। मनुष्य जब तक स्वयं अनुभव नहीं करता, तब तक उसके बोलने का अधिकारी नहीं। मुझे यदि किसी चीज का ज्ञान नहीं और उसके विषय में मैं यदि बोलूँ तो मेरा बोलना अपने आपको धोखा देना हैं क्योंकि मेरी तो वैसी अवस्था है नहीं और मैं झूठ-मूठ में आपसे कह दूँ ऐसा है, वैसा है – लेकिन यह बात नहीं।

मैंने आपको एक बात अभी सुनाई थी तिलचट्टे की और उनकी एक दूसरी वाणी भी इस प्रकार है – कि मैंने भगवान की पीठ पर खड़े होकर सद्गुरु को तोरण मारा है यानि वरण किया है, अर्थात् गुरु ही भगवान है। दुनिया जिसे भगवान कहती है – कहे दुनिया, मैं यह क्यों कहूँ कि तू भगवान क्यों कहता है - कहे दुनिया भगवान किन्तु मेरा भगवान कौन है, मेरा भगवान है मेरा गुरु। अभी सुना टेप रिकार्डर से कि जो जीता जागता व्यक्ति है उसमें भगवान खोजना कठिन है। बिल्कुल ठीक है। एक पत्थर को आप भगवान मान सकती हो लेकिन एक व्यक्ति जो जीता जागता है उसके भीतर आप भगवान का रूप देख सको – बिना प्रभु की कृपा के होगा नहीं। आप उसमें ऐब देखोगी। यह आपकी ऐब की दृष्टि, दोष पूर्ण दृष्टि, अपराध खोजने वाली दृष्टि इतनी दृढ़ है कि आप किसी को भी देखोगी तो यह कहोगी – इसमें तो अमुक खराबी है और वह बिचारी पत्थर की मूर्ति उसमें आप कौन-सी खराबी देखोगी। जो कुछ भी हो खराबी देखने वाला खराब ही होकर रह जायेगा और गुण देखने वाला गुणी हो जायेगा। आपके भीतर में जो जो वृत्तियाँ मुख बन्द करके पड़ी हैं, कहती हैं – कोई आये, कोई पानी पिलाये, कोई बन्धन से छुड़ाये, तब कहीं आनन्द आता है। एक-एक वृत्ति आपके भीतर की खिलना चाहती है। लेकिन आप जानती हैं न फूल को खिलने के लिए क्या चाहिये – जल चाहिए। आप बाजार से कली लेकर आओ, पानी में उसे रखो, ठीक से उसे रखो, देखो वही खिलती है कि नहीं ? क्योंकि उसका जीवन है

पानी। इसी तरह जीव का अमरत्व भाव ही प्रधान है। आप यह न समझो कि नर मर कर अमर होता है। मर-मर कर अमर होने वाले दूसरी तरह के लोग हैं, जैसे कि राणाप्रताप, शिवाजी, उन्होंने वीरता दिखलाई। किन्तु उनका इतिहास अधिक नहीं चलता। इतिहास के पन्ने में जहाँ बीस लाईन है वहाँ तीन लाईन उनके नाम की भी है। किन्तु जो भगवान के प्रेमी हैं युग-युग बीत जाते हैं और उनकी कथा पत्थर पर नहीं लिखी जाती, दिल पर लिखी जाती है।

मीरा ने किसी को क्या दिया? पद तो बहुत लोग बनाते हैं लेकिन मीरा जैसा जीवन नहीं बनाते। तो जब तक मीरा जैसा जीवन नहीं बनेगा, केवल पद बनेगा उस पद के भीतर अमरत्व नहीं आयेगा। "पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे" क्यों? प्रिय को रिझाने के लिए, प्रिय तो रीझा हुआ है। इतना आनन्द-आनन्द आ गया कि वह अपने आपको रोक नहीं सकी – नाचने लगी। कभी-कभी आप बहुत प्रसन्न हो तो – देखेंगी आप हँसने लगती हैं, और मन में एक विचित्र प्रकार का भाव आने लगता है, भाव जो था, वह भाव ही मीरा को नचाता था। वह रह नहीं सकती थी।

मैंने एक व्यक्ति को देखा – राजस्थानी था, पैर में घुँघरू बाँध कर नाच रहा था और लोग हँस रहे थे। मुझसे रहा नहीं गया – मैंने कहा अधिक तो नहीं, अगर आप इस समय घुँघरू बाँध कर इसी तरह नाचे तो मैं आपको एक हजार रुपये दूँगा। उनको पुरुषत्व का अभिमान है कि हम पुरुष और हम पैर में घुँघरू बाँध कर और इतने लोगों के सामने नाचें? रुपया प्रधान नहीं है, यह झूठी इज्जत प्रधान है। नाचते हुए देखा है मैंने नवद्वीप में बड़े-बड़े महापण्डित को – गौरांग-गौरांग-गौरांग-गौरांग। क्यों? जीवन दिया है, भीतर की रग-रग में वह रस दिया है जो गौरांग ने अपने जीवन में प्राप्त किया।

सोचो और समझो। आपका जीवन एक गुड़िया का जीवन नहीं है। आप सत्संग में आई हो, आपके जीवन का कोई उद्देश्य है और वह उद्देश्य है अमरत्व प्राप्त करना और अमरत्व आप कैसे प्राप्त करोगी? सद्गुरु की जब भक्ति होगी। आप याद रखो - शरीर की पूजा करने वाला शरीर तक ही रह जाता है और भाव की पूजा करने वाला स्वयं भाव में आ जाता है। तो जो लोग शरीर की पूजा में लगे – वह यहीं रह गये और जिन्होंने भाव की पूजा की, जिस भाव को लेकर नानक महाराज आगे बढ़े-निरंकारी, उसी रूप में भगवान को जो "निराकार या साकार" जो रूप उन्हें अच्छा लगे, उसमें जो चलेगा वह सचमुच में प्रभु की कृपा से अवश्य ही अमृत पान करेगा।

मृत है शरीर और अमर है आत्मा। और यह आत्मा किसी के मारे मरती नहीं इसीलिए आज की यह बातें आपको यही सन्देश दे रही है, सन्देश तो प्रभु की कृपा से बहुत बार आपने प्रसाद के रूप में चखा है मुख से आज आपको वाणी का सन्देश दिया जा रहा है, केवल मुख के मिठास के लिये नहीं आत्मा को अमर करने के लिये, और यह आत्मा का अमर भाव जब आपके हृदय में आयेगा तो फिर आप यह समझें वह आयेगा, वह आयेगा, वह जरूर आयेगा, जिसके लिए हम छटपटाते हैं, उसकी भावना आयेगी। यह न समझें आप कि नहीं आयेगा। आपके हृदय की जो पवित्र प्रार्थना है उसको सुनकर तो पत्थर भी फट जाता है, इन्सान की बात क्या। अवश्य आयेगा और इन गिरे हुये, पड़े हुये लोगों को उठायेगा और हृदय से लगायेगा क्योंकि वह सद्गुरु है।

❋❋❋